उत्पत्ति अध्याय ८:
परमेश्वर ने नूह को स्मरण किया

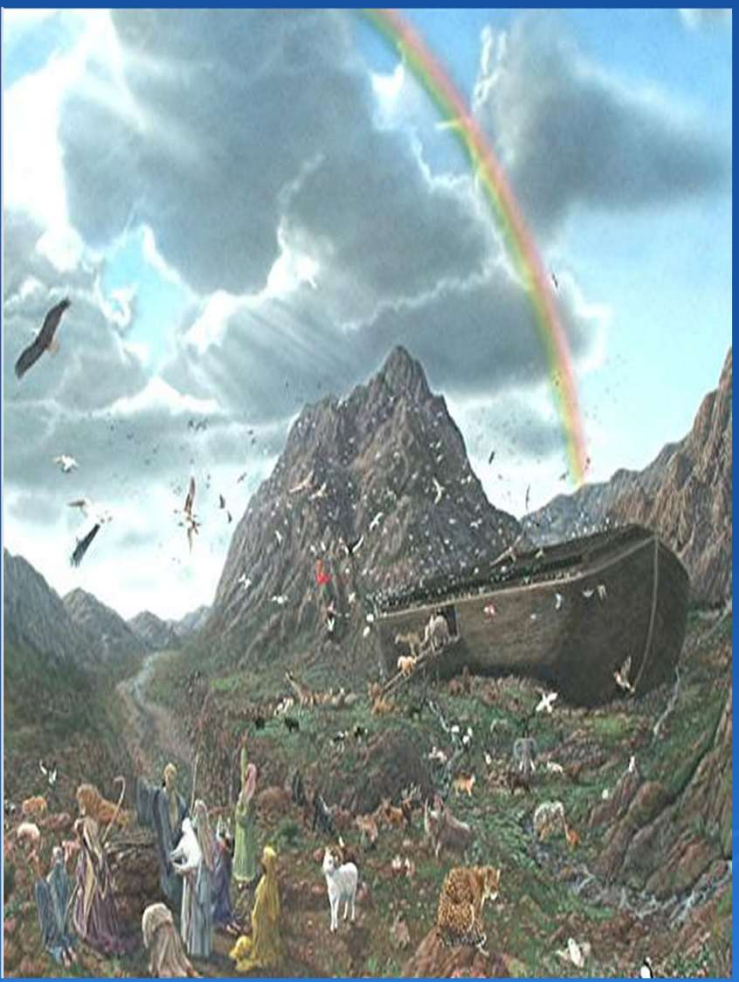

- पद १ में कहा गया है: परमेश्वर ने नूह को, और उसके संग जहाज़ में जितने बनैले पशु तथा घरेलू पशु थे, उन सब की सुधि ली।
- उसने न केवल नूह को, वरन् उसके साथ रहने वाले सभी जीवित प्राणियों को भी स्मरण किया।
- पशु और मानव जाति एक ही भौतिक तत्व से सृजित हैं: धूल से बने हुए।
- दोनों में ही जीवन की आत्मा (जीवन का प्राण) है।
- पशुओं को आदम के समक्ष संभावित साथी के रूप में प्रस्तुत किया गया था, न कि जोड़ीदार (mate) के रूप में!
- मनुष्य पशुओं से थोड़ा ऊपर है, परमेश्वर की सृष्टि में उसकी विशेष स्थिति है।

रूह: वेग से बहने वाली हवा

- पवित्र आत्मा = रूह हकोदेश
- रूह अक्सर परमेश्वर के आत्मा को व्यक्त करने के लिए प्रयोग किया जाता है
- जैसे जल १५० दिनों तक बढ़ता रहा, वैसे ही वह १५० दिनों तक घटता रहा

आरारात के पहाड़

- यह केवल एकल अरारत पर्वत नहीं, वरन् आरारात पर्वतमाला है
- आधुनिक काल में यह तुर्की देश में स्थित है
- जहाज़ सातवें महीने के सत्रहवें दिन को आरारात के पहाड़ों पर टिक गया

भूमि सूख गई

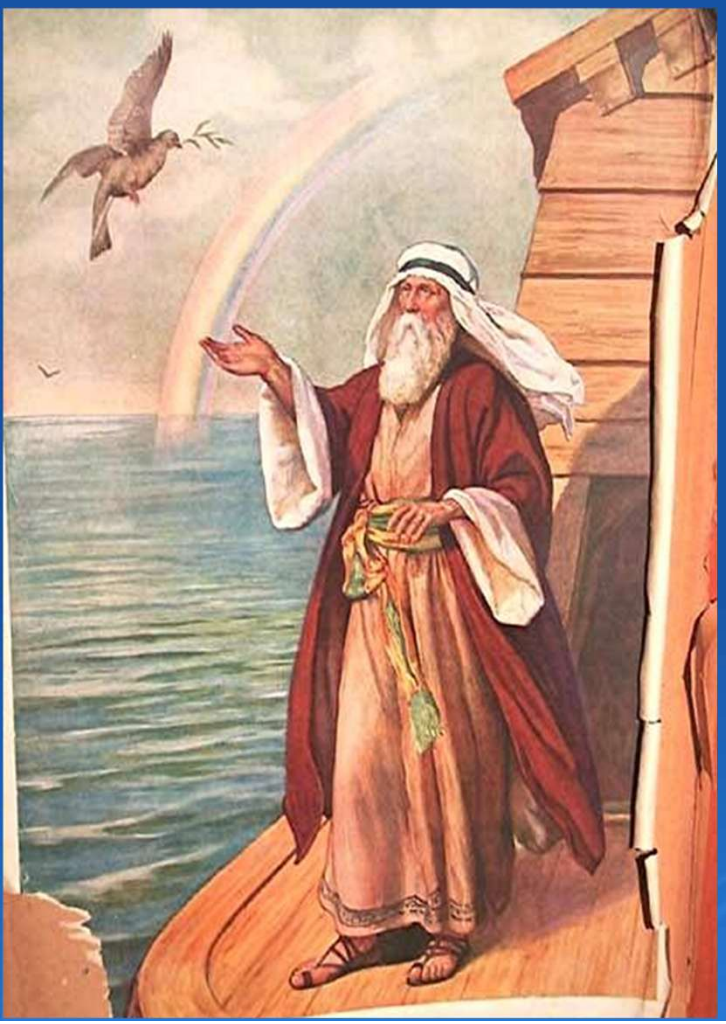

- सबसे पहले कौवा भेजा गया (जो अशुद्ध पक्षी है)
- उसके पश्चात् कबूतर (शुद्ध पक्षी) भेजा गया, जो जलपाई के वृक्ष की टहनी लेकर लौट आया
- फिर एक अन्य कबूतर भेजा गया, जो कभी लौटकर नहीं आया
- जलपाई के वृक्ष वास्तव में जल के नीचे भी पत्तियाँ उगा सकते हैं!
- पहले महीने का पहला दिन = नया वर्ष
- दूसरे वर्ष में, दूसरे महीने के सत्ताईसवें दिन को, नूह जहाज़ से बाहर निकल सका

पुराना शुद्ध किया गया, और नया पवित्र किया गया

- केवल मृत्यु के द्वारा ही पुनर्जनन प्राप्त होता है
- पद २० –वेदी पर बलिदान नूह का पहला कार्य था
- प्रत्येक शुद्ध पशु की जाति का बलिदान चढ़ाया गया
- यदि केवल एक जोड़ा ही शुद्ध पशुओं का जहाज़ में लाया गया होता, तो विनाश (प्रजाति का समाप्त होना) ही परिणाम होता

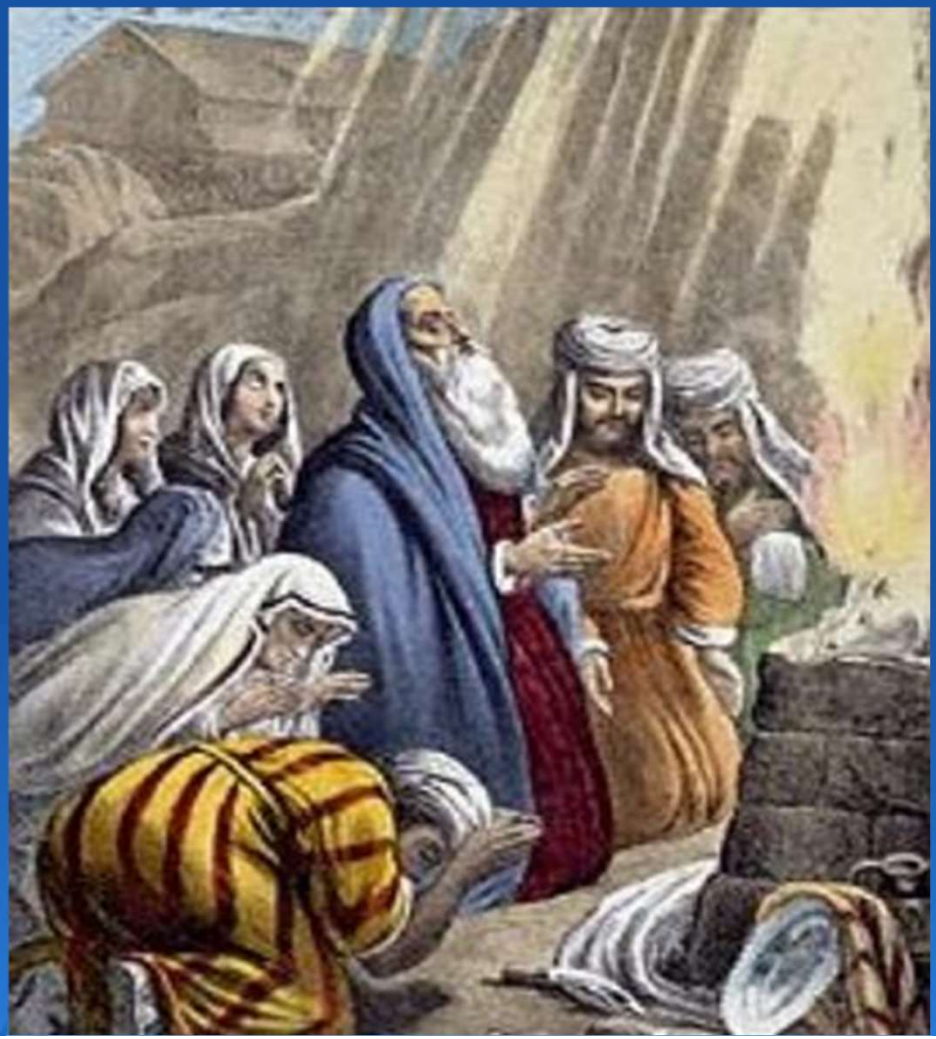

अशुद्ध पशुओं का क्या उद्देश्य था?

- अशुद्ध पशुओं की कई जातियाँ मृत पदार्थों को खाकर सफाई करने वाली थीं
- सृष्टि विपरीतों के सिद्धांत के अधीन कार्य करती है
- शुद्ध का अस्तित्व तभी संभव है, जब अशुद्ध भी हो
- अशुद्ध पशु न तो बुरे हैं, न ही कम महत्वपूर्ण, और न ही शुद्ध पशुओं से घटिया हैं

“मनुष्य के हृदय में जो बनता है ,वह उसकी युवावस्था से ही बुराई है...”

- १) नूह का बलिदान स्वीकार किया गया
- २) संसार फिर कभी जल-प्रलय से नष्ट नहीं किया जाएगा
- ३) मनुष्य का हृदय तुरंत ही बुराई की ओर झुका हुआ है
- शैतान बुराई का सृजन नहीं करता! वह मनुष्य की बुराई की प्रवृत्ति का उपयोग करता है, छल और झूठ के द्वारा उसे बहकाकर

“उसके जागरण से ही.....”

- Mine’araẃ का अर्थ है “उसके जागरण से” या “उसकी युवावस्था से”
- वह बिंदु जहाँ मनुष्य में “बोध” या “जागरूकता” उत्पन्न होती है

<u>हृदय १००% बुराई नहीं है</u>

- सभी मनुष्य अच्छी प्रवृत्ति और बुराई की प्रवृत्ति दोनों के साथ जन्म लेते हैं

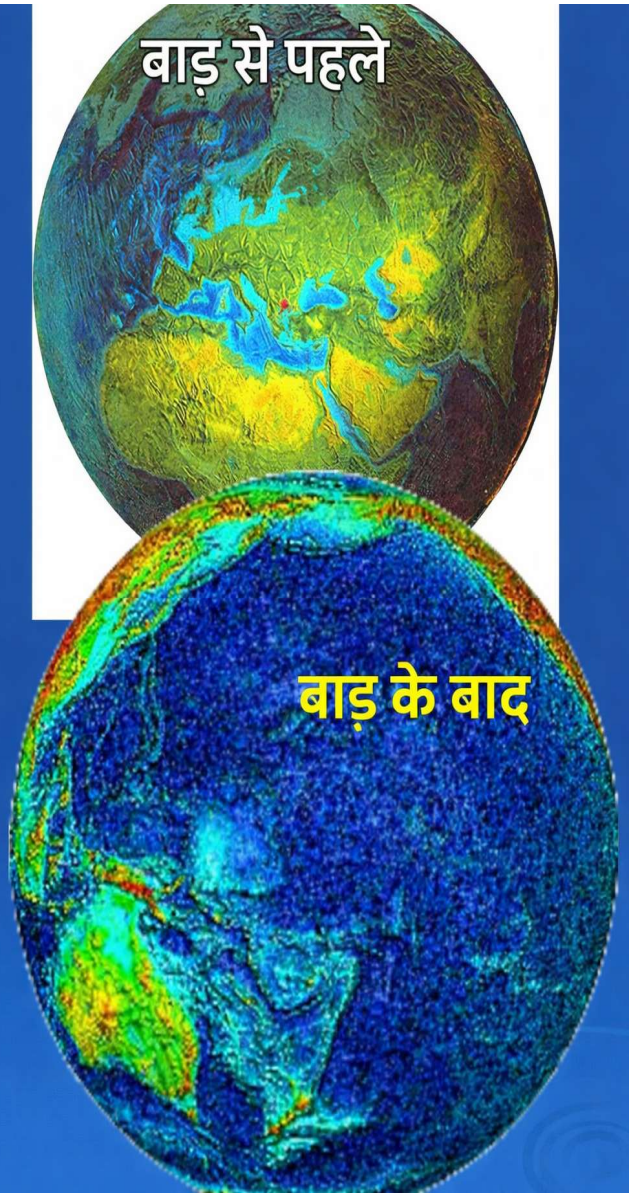

- ईदन की वाटिका जल-प्रलय के पश्चात् समाप्त हो गई
- अब से बाइबल में मनुष्य ऊपर की ओर देखता है, और परमेश्वर मनुष्य पर नीचे की ओर दृष्टि डालता है
- पृथ्वी जल-प्रलय के पश्चात् बहुत भिन्न हो गई
- समुद्र पहले से कहीं अधिक विस्तृत हो गए
- भूमि वनस्पति से रहित और बंजर हो गई
- वायु में जो कुहासा (ओस) था, वह समाप्त हो गया
- जलवायु में अधिक तीव्र और कठोर परिवर्तन आने लगे
- ऋतुएँ अधिक स्पष्ट हो गईं

नूह नया आदम था

- हम आदम से अधिक निकटता से नूह से संबंधित हैं
- आदम परमेश्वर की सूरत में सृजित किया गया था, नूह आदम की सूरत में सृजित हुआ
- आदम पूर्णता में जन्मा, नूह अपूर्णता में जन्मा
- संसार का नया आधार: पाप समस्त संसार में और प्रत्येक सृष्टि में स्थापित हो गया

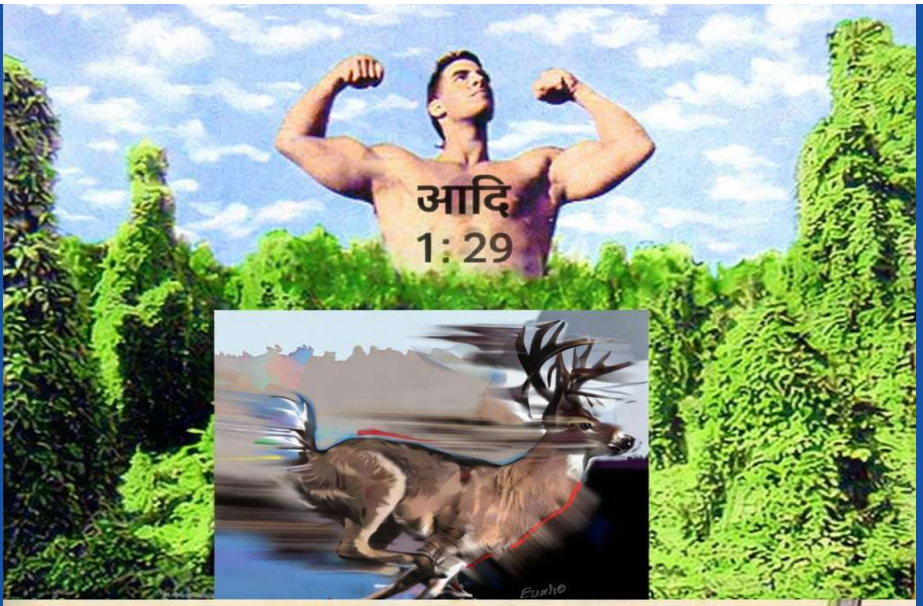

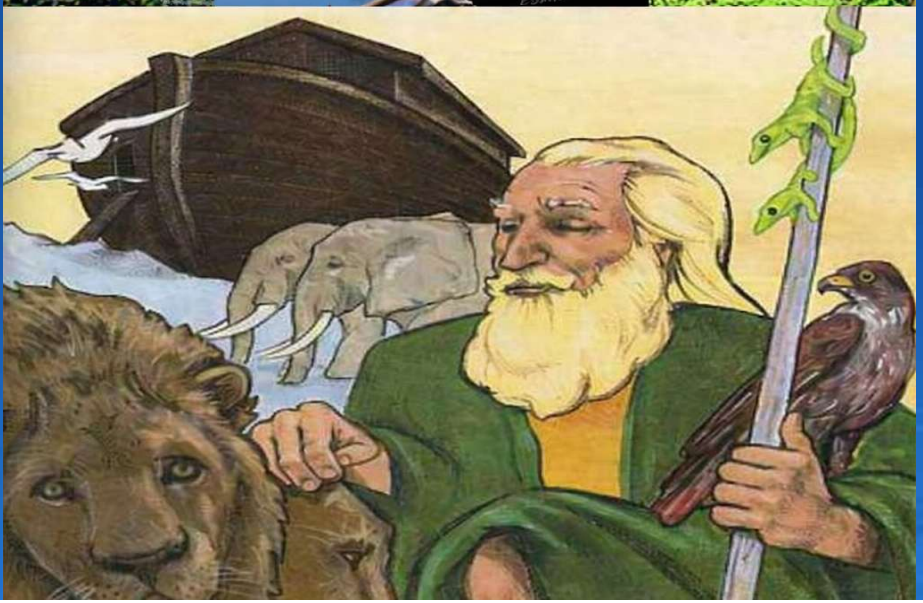

उत्पत्ति अध्याय ९: मनुष्य का प्रभुत्व

- मनुष्य का परमेश्वर के साथ, उसके पर्यावरण के साथ, और उसकी जिम्मेदारियों के साथ संबंध बदल गया
- पशु अब मनुष्य से भयभीत हो गए हैं
- सभी "जीवित प्राणी" भोजन के लिए ठीक हैं (कुछ निश्चित नियमों / प्रतिबंधों के साथ)

रक्त का सेवन निषिद्ध है

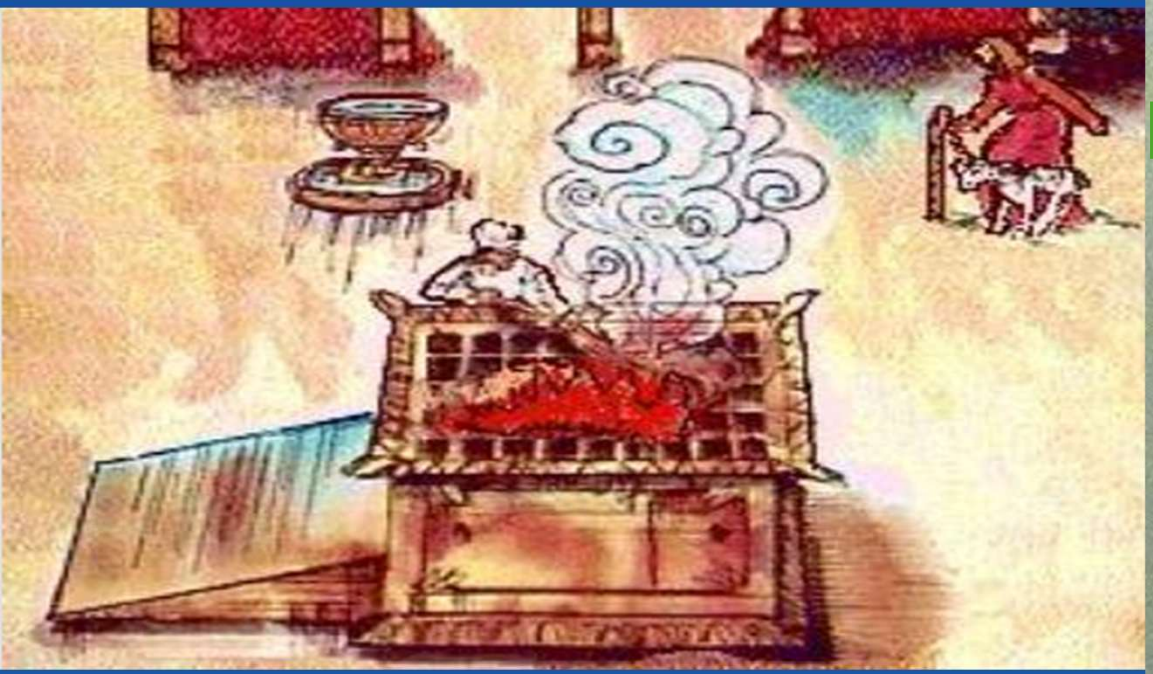

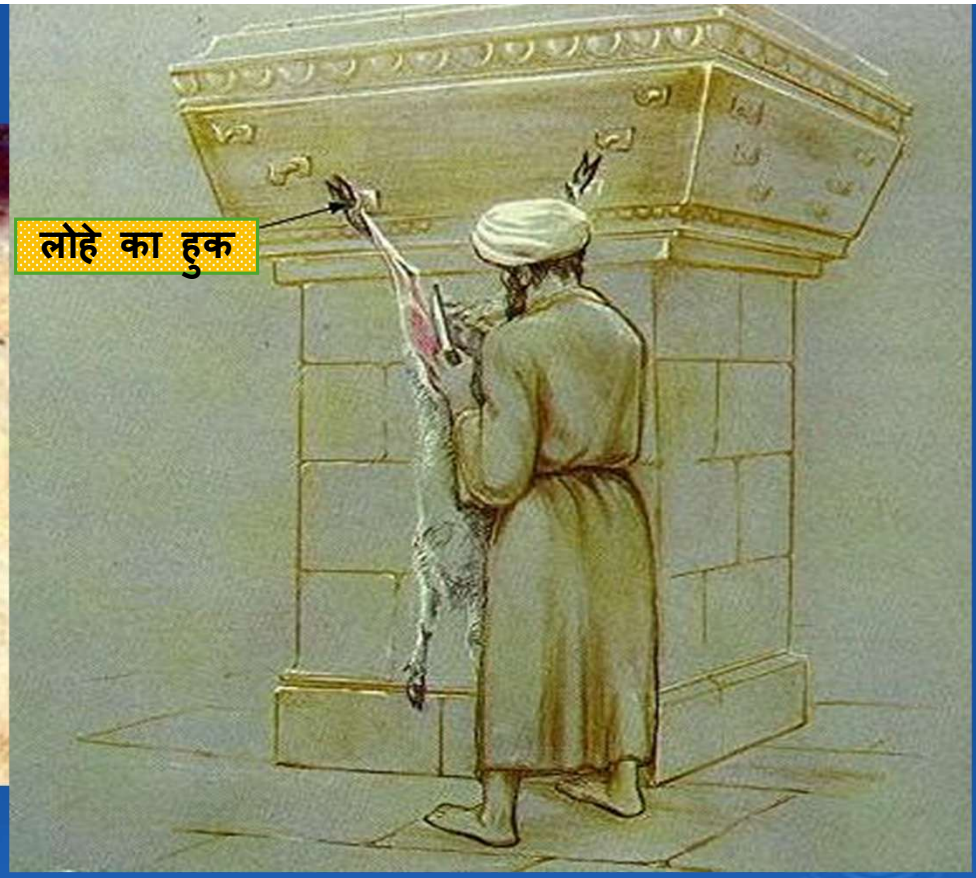

- रक्त में ही जीवन है
- रक्त केवल यहोवा के लिए बलिदान में प्रयोग किया जाना था
- रक्त मनुष्य के लिए अति पवित्र है

हत्या विशेष रूप से निषिद्ध है

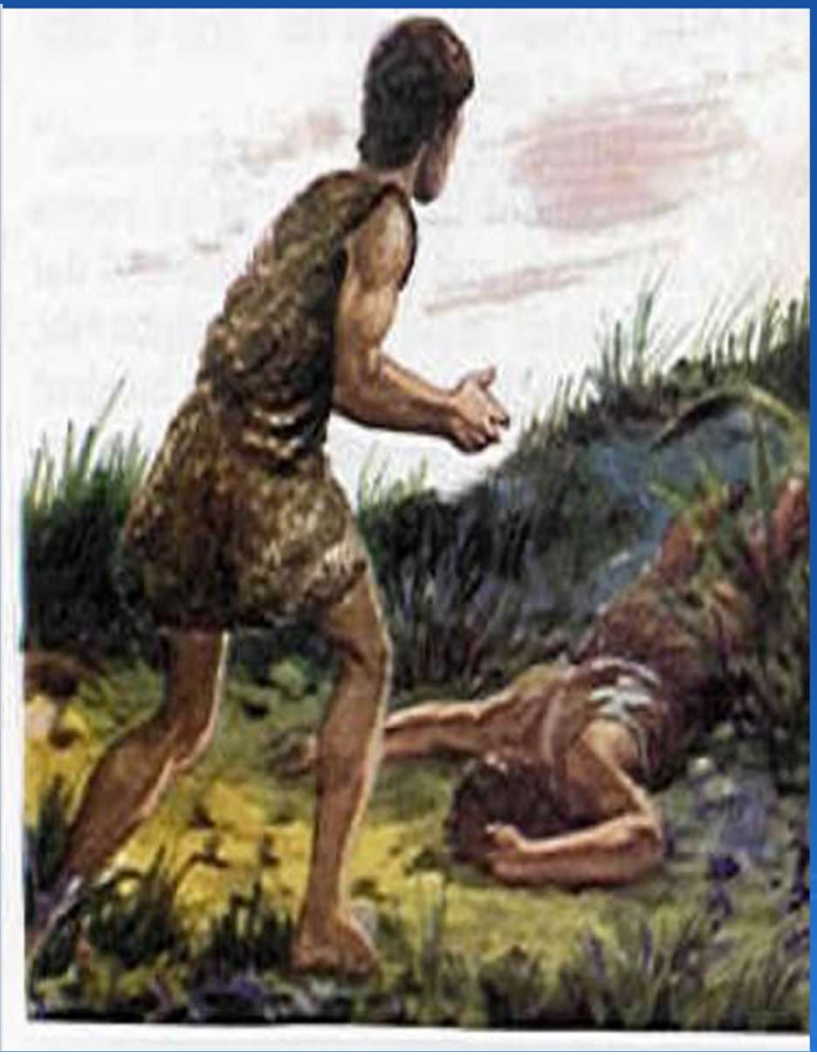

- मनुष्य को अब न्याय करने का अधिकार दिया गया है
- जल-प्रलय से पहले हत्या की सजा प्रतीत होती है कि परमेश्वर से निर्वासन (बेदखली) थी
- जल-प्रलय के पश्चात् हत्या की सजा मृत्युदण्ड है
- पृथ्वी पर शासकीय व्यवस्था का सिद्धांत स्थापित हो गया है

७ नोआहाईदी नियम

- १) मूर्तिपूजा न करना
- २) ईशनिंदा न करना (परमेश्वर के नाम का व्यर्थ प्रयोग न करना)
- ३) हत्या न करना
- ४) व्यभिचार / निकट संबंधियों से संबंध न करना (अनाचार न करना)
- ५) चोरी न करना
- ६) रक्त का भक्षण न करना, और न ही गला घोंटे हुए पशु का मांस खाना
- ७) मनुष्य को मानवीय शासकीय सत्ता के अधीन रहना चाहिए (नागरिक अधिकारियों का आज्ञापालन करना)

पद ८ अनुबंध (संविदा)

- परमेश्वर ने नूह के साथ अनुबंध स्थापित किया
- अनुबंध एक संविदा है, इस मामले में यह एक प्रतिज्ञा है
- नूह का अनुबंध एकपक्षीय है..... यह मनुष्य पर निर्भर नहीं करता
- कुछ अनुबंधों में दोनों पक्षों की आवश्यकताएँ होती हैं (द्विपक्षीय)
- नोआहाईदी अनुबंध बाइबल में नाम से उल्लिखित पहला अनुबंध है
- अनुबंध: परमेश्वर फिर कभी संसार को जल-प्रलय के द्वारा नष्ट नहीं करेंगे

पहला इंद्रधनुष?

- परमेश्वर ने आकाश में बहुत-सी वस्तुओं को चिन्हों के लिए विशेष रूप से स्थापित किया
- हर बार जब वह कोई चिन्ह प्रयोग करना चाहता था, तो कोई नई वस्तु नहीं बनाता था
- "परमेश्वर स्मरण करेगा....."
- यह भाषा का अलंकार है (व्यक्ति-वाचक रूप)
- परमेश्वर मनुष्य नहीं है
- जल-प्रलय के बाद की पहली पीढ़ी प्रत्येक नए वर्षा-तूफान में बहुत चिंतित रहती होगी कि कहीं वह रुक न जाए!!